ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति नए महानुभावों के भावों को अंकित करवाएं
भाव स्मरण पुस्तिका
vedicprakashan.com 96501 83336

वर्ष 47, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 अगस्त, 2024 से रविवार 11 अगस्त, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

स्वतन्त्रता दिवस की 78वीं वर्षगांठ पर सभी देशवासियों को बधाई

स्वाधीनता की सुरक्षा के लिए युवा शक्ति को जागना होगा

पुण्यमय भारत देश अपनी स्वाधीनता की 78 वीं वर्षगांठ 15 अगस्त 2024 को पूरे उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाएगा। और क्यों न मनाएं? यह तो हमारी आन, बान और शान को बढाने वाला, हम सब भारतीयों को स्वतंत्रता के निज गौरव का अनुभव कराने वाला राष्ट्रीय पर्व है, हमारी आजादी की 78वीं वर्षगांठ का महान उत्सव है, इसके लिए ही तो हमारे अमर शहीदों ने कठिन से कठिन यातनाएं भी हंसते मुस्कराते सही थी। अपना सर्वस्व भारत माता को परतंत्रता की बेडियों से मुक्त कराने के लिए आहूत कर दिया था। फांसी के फंदे को चूमते हुए भी हमारे अमर वीर बलिदानियों ने देश भक्ति के गीत गाए और गुनगुनाए थे। यूं तो हम पिछले 77 वर्षों से हर वर्ष अपना स्वाधीनता दिवस मनाते आ रहे हैं, इस वर्ष भी मना रहे हैं लेकिन इस अवसर पर हमें यह अवश्य विचारना चाहिए कि हम पराधीन क्यों हो

यूं तो हम पिछले 77 वर्षों से हर वर्ष अपना स्वाधीनता दिवस मनाते आ रहे हैं, इस वर्ष भी मना रहे हैं लेकिन इस अवसर पर हमें यह अवश्य विचारना चाहिए कि हम पराधीन क्यों हो गए थे? पराधीनता से पूर्व हम क्या थे? हमारा गौरवशाली इतिहास कैसा था? आजादी के लिए हमारे अमर शहीदों ने किस तरह का पराक्रम दिखाया, कैसी कैसी कुर्बानी दी? इन समस्त बिदुओं पर विचारते हुए हमें यह भी सोचना चाहिए कि आज की परिस्थितियों में आजादी का उत्सव मनाना तो अत्यंत सरल, सहज और स्वाभाविक भी है किंतु आजादी को सुरक्षित रखने की चुनौति आज कितनी कठिन और मुश्किल है?

गए थे? पराधीनता से पूर्व हम क्या थे? हमारा गौरवशाली इतिहास कैसा था? आजादी के लिए हमारे अमर शहीदों ने किस तरह का पराक्रम दिखाया, कैसी कैसी कुर्बानी दी? इन समस्त बिदुओं पर विचारते हुए हमें यह भी सोचना चाहिए कि आज की परिस्थितियों में आजादी का उत्सव मनाना तो अत्यंत सरल, सहज और स्वाभाविक भी है किंतु आजादी को सुरक्षित रखने की चुनौति आज कितनी कठिन और मुश्किल है?

यह सर्वविदित है कि संपूर्ण विश्व भारत को सम्मान से सोने की चिड़िया के नाम से पुकारता था। विश्व गुरु होने का गौरव भी भारत को ही प्राप्त था। हमारी संस्कृति विश्व की आदर्श संस्कृति थीं, यहीं से विश्व के लोग शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते थे। उस समय यहां पर उचित न्याय व्यवस्था थीं, धन-धान्य की कमी नहीं थी, खान-पान शुद्ध और पौष्टिक था, चारों तरफ सुख-शांति प्रेम सौहार्द का वातावरण था। लेकिन बहते समय के प्रवाह के साथ भारतवासियों का आचरण और व्यवहार बदला और देखते ही देखते हमारे भारत देश पर परतंत्रता के बादल मंडराने लगे

- शेष पृष्ठ 7 पर

ब्रिटेन में हिंसा-आगजनी : ब्रिटेन के निकट भविष्य की तस्वीर

विशेष सम्पादकीय लेख पृष्ठ 2 पर

स्वामी रामभद्राचार्य के अनर्गल प्रलाप के विरुद्ध आर्य समाज का धरना

स्वामी रामभद्राचार्य जी के स्पष्टीकरण देने से मिलेगी हिन्दू समाज को मजबूती

आर्यसमाज है हिन्दू समाज की रक्षा पंक्ति : इसको कमजोर करने का अर्थ है हिन्दू समाज को कमजोर करना

क्षमा नहीं – स्पष्टीकरण है – उद्देश्य

आधुनिक भारत के निर्माता, महान समाज सुधारक, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ज़ी का सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित रहा। महर्षि के प्रति भारत की महान विभूतियों ने समय समय पर उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा करते हुए अपने अविस्मरणीय ऐतिहासिक उदगार प्रस्तुत किए हैं। वास्तव में महर्षि दयानंद सरस्वती जैसा लोकोपकारी महामानव महाभारत काल के बाद अब तक इस पृथ्वी पर नहीं जन्मा है, उनका राष्ट्रवादी चितन, मानव समाज के कल्याण की प्रेरणा, वेदों का उद्धार और मानव सेवा तथा कल्याण की भावना और कामना केवल भारत तक

- शेष पृष्ठ 5 पर

देववाणी-संस्कृत

प्राणों से प्यारे! हमारा सदैव कल्याण करो

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।। ऋ० 1/1/6
ऋषिः - मधुछन्दा ।। **देवता**- अग्निः।। **छन्दः** - गायत्री।।

शब्दार्थ- **अङ्ग** = हे प्यारे! **अङ्गिरः** =मेरे जीवनसार **अग्ने** =प्रकाशकदेव! **यत् त्वम्** =जो तू **दाशुषे** =बलिदान करने वाले का **भद्रम्** =कल्याण **करिष्यसि** = करता है **तत्** =वह **तव** =तेरा **सत्यं इत्** =सच्चा न टलनेवाला नियम है।

विनय- हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थत्यागी का कल्याण ही होता है, परन्तु संसार में ऐसा दिखाई नहीं देता। संसार में तो दीखता है कि स्वार्थमग्न लोग ही आनन्द-मौज उड़ा रहा हैं और स्वार्थत्यागी दुःख भोग रहे हैं। स्वार्थी विजय-पर-विजय पा रहे हैं, दूसरों पर अत्याचार कर रहे हैं और स्वार्थत्यागी पुरुष सताये जा रहे हैं, परन्तु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की भाँति यह स्पष्ट देख रहा हूँ की आत्म-बलिदान करनेवाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा; यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। संसार की ये प्रतिदिन की उलटी दिखाई देने वाली घटनाएँ भी आज मेरी खुली आँखों के सामने से इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकतीं कि आत्मसमर्पण करने वालेवाले के लिए कल्याण ही कल्याण हैं मैं देखता हूँ कि संसार में चाहे कभी सूर्य टल जाए, ऋतुएँ बदल जाएँ, पृथ्वी उलटी घूमने लग जाए और सब असम्भव सम्भव हो जाए, परन्तु तेरा यह सत्य अटल है कि आत्म-बलिदान करने वाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता-**'नहिकल्याणकृत कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति'** '[है प्यारे! कल्याण करने वाला कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होता]' - कृष्ण भगवान् के गाये हुए ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन के जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म-बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याण स्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रुकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याण स्वरूप को पाता है। भला, आत्म-बलिदान में अकल्याण का अवकाश ही कहाँ है? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरुषों पर आये हुए कष्ट, दुःख, आपत् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध में जो अक्षणिक है, सत्य है, अटल है, वह तो उनका कल्याण है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वेद-स्वाध्याय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ब्रिटेन में हिंसा आगजनी की समीक्षा

ये ब्रिटेन के निकट भविष्य की तस्वीर है

ब्रिटेन के कई शहरों में हिंसा का तांडव नहीं थम रहा है और भारी भीड़ हिंसक प्रदर्शनों को अंजाम दे रही है। भीड़ पुलिस पर बमगोले बरसा रही है और सुरक्षाबलों का दस्ता अपने कदम पीछे खींचने को मजबूर है। ब्रिटेन की तस्वीरों को देखकर आपको लगेगा मानो दुनिया का कोई सुपरपावर नहीं, बल्कि सीरिया, सोमालिया, युगांडा जैसी कंट्री है। जो ब्रिटेन एक जमाने में दुनिया के सबसे बड़े इलाके पर हुकूमत करता था। उस समय पूरी दुनिया में इनका डर और दबदबा था, लेकिन आज ये अंग्रेज अपने ही देश में मौजूद कट्टरपंथियों से डरे और घबराए हुए हैं।

हालात इतने बुरे हैं बताये जा रहे हैं कि जलते ब्रिटेन की तस्वीरों को देखकर दुनिया हैरान और परेशान है। जिस ब्रिटेन में बसना लोगों का सपना हुआ करता था, लेकिन ब्रिटेन की ड्रीम सिटीज अब दंगा सिटी बन गई हैं या कहो कुछ कट्टरपंथी जमातों की वजह से ताकतवर ब्रिटेन की प्रतिष्ठा खाक में मिल गई है। एक नहीं, दो नहीं, बल्कि ब्रिटेन के कई शहर दंगों की आग में झुलस रहे हैं। राजधानी लंदन से लेकर टेक्सटाइल कैपिटल मैनचेस्टर को दंगाइयों ने आग के हवाले कर दिया है। जिस लिवरपूल को आप फुटबॉल क्लब टीम से जानते हैं और जिस लीड्स में क्रिकेट मैच होते हैं, दोनों ही जगहों पर फिलहाल दंगों का खेल खेला जा रहा है। कमोबेश ब्रिटेन के शहर-शहर की तस्वीर एक सी है।

बताया जा रहा है कि ब्रिटेन के कार्डिफ में दंगाइयों ने सड़कों पर मौजूद गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया। महंगी-महंगी कारें धधक-धधक कर जल रही हैं, वो भी एक नहीं, दो नहीं, कई कारें आग में जलकर खाक होने की कगार पर हैं। और जो अपनी कार को यहां से बचाकर भागने की कोशिश कर रहे हैं, भीड़ उनकी कार के बोनट पर चढ़ जाती है और कार पर लात-घूसे चलाकर शीशे को तोड़ने लगती है। ब्रिटेन में ऐसा हाल एक नहीं, कई दुकानों का किया गया है। कुछ दिन पहले तक जहां बाजार चकाचौंध से दमक रहे थे, वहां धुएं का गुबार आसमान में तैर रहा है, कहीं दुकानें जली नजर आ रही हैं तो कहीं गाड़ियां जलकर खाक हो चुकी हैं।

दुनिया में कानून व्यवस्था की मिसाल माना जाने वाला ब्रिटेन में पूरी कोशिश के बाद भी कई इलाकों में हालात आउट ऑफ कंट्रोल हैं। ऐसा लग रहा है मानो ये आग अभी तो कुछ शहरों तक सीमित है, लेकिन जल्द ही पूरे ब्रिटेन को अपनी चपेट में ले लेगी। ब्रिटेन की सरकारें भारत और दूसरे देशों को सांप्रदायिक मामलों पर ज्ञान दिया करती थी। आज उसी ब्रिटेन में सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं। ब्रिटेन के मूल निवासी अब कट्टरपंथियों से इतने परेशान हैं कि उन्हें ब्रिटेन से बाहर भेजने के लिए सड़कों पर उतर आए हैं। बाकायदा रैलियां निकाली जा रही हैं, जिसमें इस्लाम विरोधी नारे लग रहे हैं। ब्रिटेन की सड़कों पर एक तरफ जहां अल्लाह हू अकबर की नारेबाजी हो रही है, तो दूसरी तरफ से गो बैक पाकी के नारे बुलंद हो रहे हैं। ब्रिटेन में तीन छोटी बच्चियों की मौत के बाद फैली एक अफवाह ने हिंसा की आग में पेट्रोल डाल दिया; वहां सोशल मीडिया पर अफवाह फैल गई कि संदिग्ध चाकूबाज आरोपी एक मुस्लिम युवक है। इसके बाद ब्रिटेन में स्थानीय अंग्रेजों और अप्रवासी इस्लामिक कट्टरपंथियों के बीच झड़प शुरू हो गई । पुलिस ने मस्जिदों को अपनी सुरक्षा बढ़ाने की सलाह दी है और पुलिस ने अतिरिक्त अधिकारियों के साथ अपनी मौजूदगी बढ़ा दी है। लेकिन, स्थानीय लोगों का गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। पुलिस प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश कर रही है, तो प्रदर्शनकारियों की भीड़ बेखौफ होकर पुलिस पर ही जूते और सामान फेंक रही है। प्रदर्शनकारियों की एक ही जिद है कि प्रवासी और शरणार्थी मुसलमानों को देश से बाहर किया जाए और इस मुहिम में 'बस बहुत हो गया', 'हमारे बच्चों को बचाओ' और 'नावों को रोको' जैसे नारे बुलंद हैं। यानी ब्रिटेन में खाई अब दोनों धर्मों के बीच बहुत बढ़ चुकी है, सड़क से लेकर सोशल मीडिया पर भी ऑनलाइन विरोध प्रदर्शन आयोजित किए जा रहे हैं।

जलते ब्रिटेन की तस्वीरों को देखकर दुनिया हैरान और परेशान है। जिस ब्रिटेन में बसना लोगों का सपना हुआ करता था, लेकिन ब्रिटेन की ड्रीम सिटीज अब दंगा सिटी बन गई हैं या कहो कुछ कट्टरपंथी जमातों की वजह से ताकतवर ब्रिटेन की प्रतिष्ठा खाक में मिल गई है। एक नहीं, दो नहीं, बल्कि ब्रिटेन के कई शहर दंगों की आग में झुलस रहे हैं। राजधानी लंदन से लेकर टेक्सटाइल कैपिटल मैनचेस्टर को दंगाइयों ने आग के हवाले कर दिया है। जिस लिवरपूल को आप फुटबॉल क्लब टीम से जानते हैं और जिस लीड्स में क्रिकेट मैच होते हैं, दोनों ही जगहों पर फिलहाल दंगों का खेल खेला जा रहा है। कमोबेश ब्रिटेन के शहर-शहर की तस्वीर एक सी है।

जवाब में प्रवासी और शरणार्थी मुस्लिम भी सड़कों पर उतर चुके हैं, चेहरे पर मास्क के साथ ब्रिटेन की सड़कों पर "अल्लाह हू अकबर" के नारे बुलंद हैं। तो कहीं मुस्लिम प्रदर्शनकारी हाथों में हथियार लेकर सड़कों पर खुलेआम घूमते नज़र आ रहे हैं। और जहां इनका सामना ब्रिटिश मूल के प्रदर्शनकारियों से हो रहा है, वहां ये उन्हें हथौड़े और कुल्हाड़ी के खौफ से दौड़ाने को मजबूर कर रहे हैं।

उत्तर-पश्चिमी इंग्लैंड में चाकू से हुए हमले में तीन लड़कियों की मौत हो गई थी। इसके बाद यूके में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हो रहे हैं। आने वाले दिनों में और भी प्रदर्शन की उम्मीद है। सोशल मीडिया पर शनिवार को आए वीडियो में अप्रवासी-विरोधी प्रदर्शनकारियों की भीड़ लिवरपूल की नदी के किनारे इकट्ठा होकर 'नावों को रोको' जैसे नारे लगाते हुए दिखी। दरअसल, अफ्रीका और खाड़ी के अन्य देशों से भागकर लोग यूरोप पहुंच रहे हैं। यह समुद्री रास्तों से नावों में बैठकर आते हैं। पिछले कुछ वर्षों में बड़ी संख्या में अप्रवासी आए हैं।

राइट विंग की ओर से किए गए प्रदर्शन के खिलाफ भी प्रदर्शन हो रहा है। स्वीडिश पत्रकार पीटर स्वीडन ने एक वीडियो शेयर कर दावा किया कि बॉर्डर बंद करने की मांग के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। उन्होंने एक्स पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा, "खुली सीमा विरोधी प्रदर्शनों के जवाब में नकाबपोश लोगों के बड़े सशस्त्र गिरोह ब्रिटेन की सड़कों पर 'अल्लाह हू अकबर' चिल्लाते हुए घूम रहे हैं।" ब्रिटेन के मैनचेस्टर में प्रदर्शनकारियों की भीड़ ने "हमारे बच्चों को बचाओ" जैसे नारे लिखी तख्तियां लेकर मार्च कर रही है।

अब बीबीसी यहाँ मुस्लिम पक्ष लेता दिख रहा है, लेकिन वह अपनी 2017 में लिखी वो खबर और वो विश्लेषण भूल गया जिसकी हेडलाइन ही ये थी कि ब्रिटेन में क्यों बढ़ रहा है इस्लाम का खौफ? जब मुल्ला वहां के ईसाई समुदाय पर हमला कर रहे थे, तब बीबीसी लिख रहा था कि ब्रिटेन में जून से पहले तीन चरमपंथी

- शेष पृष्ठ 7 पर

हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस पर विशेष

हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन का भावपूर्ण इतिहास

आर्य समाज के महान वीर बलिदानियों को शत शत नमन

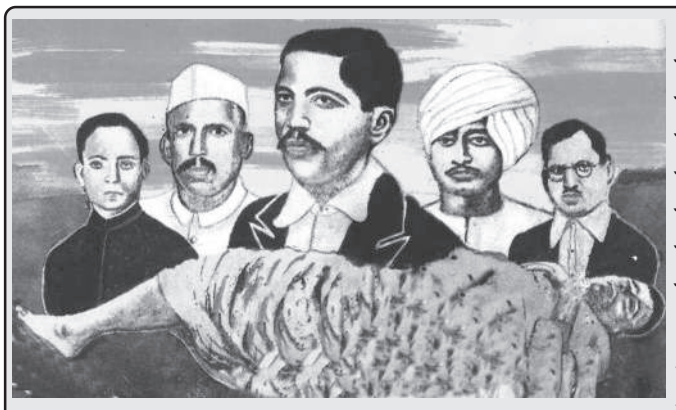

1938 में गुंजोटी में वेदप्रकाश का खून हो गया। वेदप्रकाश की हत्या का समाचार पाते ही भाई बंसीलाल और वीरभद्र जी आर्य तुरंत गुंजोटी पहुँचे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वेदप्रकाश की हत्या हैदराबाद मुक्ति संग्राम का पहला बलिदान था। उसके बाद भाई श्यामलाल जी को ख़राब खाना और पानी देकर प्रताड़ित किया गया। बीमार होने के बाद भी दवाखाने में नहीं ले जाया गया। अंततः जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया। हैदराबाद राज्य में 1938-39, इन दो सालों में शहर में हजारों की संख्या में आर्य समाजी लोगों ने सत्याग्रह किया। सोलापुर में माधवराव अणे की अध्यक्षता में एक परिषद् आयोजित की गई ताकी इस सत्याग्रह को हिंदुस्तान की जनता का भी समर्थन मिल सके। इस परिषद् मे "हैदराबाद विरोध दिवस" मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सारे हिंदुस्तान भर में "हैदराबाद विरोध दिवस" का माहौल बनने लगा। भारत भर से कई आर्य समाजी सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हैदराबाद स्टेट पहुँचने लगे। सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपुर, उत्तर प्रदेश, रावलपिंडी से हजारों कार्यकर्ता हैदराबाद में दाखिल हुए। अनगिनत सत्याग्रहियों को जेलों में ठूंस दिया गया। कईयों को पीटा गया। ख़राब खाना और पानी देने के कारण कई सत्याग्रही बीमार पड़ गए। उसमें भी हद तो तब हो गई, जब इत्तेहादुल संगठन के गुंडे जेलों में घुस कर पुलिस के सामने, सत्याग्रहियों को बेरहमी से मारने-पीटने लगे। इस अत्याचार में एक कार्यकर्ता सदाशिव विश्वनाथ पाठक की 12-08-1939 को हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई। राजस्थान के स्वामी ब्रह्मानंद जी का भी चंचलगुडा जेल में निधन हो गया। दिल्ली के शांति प्रकाश जी की भी हैदराबाद जेल में 27-07-1939 को मृत्यु हो गई। नागपुर के पुरुषोत्तम प्रभाकर की 16-12-1938 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के माखन सिंह की 01-07-1939 को हैदराबाद जेल में, रावलपिंडी के पंडित परमानंद जी की 05-04-1939 को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के स्वामी कल्याणानंद जी की 08-07-1939 को गुलबर्गा जेल में, बैंगलोर के स्वामी सत्यानंद जी को चंचलगुडा जेल में, विष्णु भगवंत अंदुरकर की 02-05-1939 को चंचलगुडा जेल में, व्यंकटराव कंधारकर की 09-04-1939 को निजामाबाद जेल में मृत्यु हुई। उमरी, जिला नांदेड में गणपतराव, गंगाराम और दत्तात्रेय इन तीन आर्य समाजी प्रचारकों को पठानों ने पत्थरों से पीट-पीट कर मार डाला ।

हैदराबाद राज्य में सन 1920 में आर्य समाज की स्थापना हुई। इसके 2-3 सालों में ही व्यवस्थित ढंग से काम करने वाली लगभग 200 शाखाएं खुल गई। निज़ामी राज्य में हैदराबाद के विनायकराव कोरटकर आर्य समाज के अध्यक्ष और बंसीलालजी मंत्री थे। उन्होंने उदगीर में अपना मुख्य कार्यालय खोला। उन्होंने "वैदिक संदेश" नामक वृत्तपत्र सोलापुर से प्रकाशित करना शुरू किया। "वैदिक संदेश" को निज़ाम स्टेट में सभी स्थानों पर पहुँचाने की व्यवस्था की गई। आर्य समाज अत्यंत अनुशासनप्रिय और ध्येयवादी संगठन के रूप में कार्य करने लगा। मातृभूमि के प्रति निश्छल प्रेम और वैदिक धर्म पर प्रगाढ़ निष्ठा, इन दो मानबिंदुओं के लिए हर आर्य समाजी अपनी जान की भी बाजी लगाने को तैयार रहता था। हैदराबाद राज्य के बहुसंख्यक समाज का कोई रखवाला नहीं था। उलटे हिंदुओं को समाप्त करने के लिए खाकसार पार्टी, निज़ाम सेना, इत्तेहादुल संगठन, दीनदार सिद्दीक़ के धर्मप्रचारक अनुयायी, सबने कोहराम मचा रखा था। सब समझ चुके थे कि इन सबका प्रतिकार करने वाला, हिंदुओ का एकमात्र संगठन आर्य समाज ही है । उत्तर भारत से सैंकड़ों आर्य समाजी कार्यकर्ता अपनी जान की परवाह किये बिना, निजाम राज्य में चले आये । विशेषकर मराठवाडा में कई आर्य समाजी नेता और कार्यकर्ता निजाम के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गए ।

2/9/1929 को "दीनदार सिद्दीक़ पार्टी" नामक इस्लाम धर्म प्रसारक संस्था की स्थापना हैदराबाद राज्य में हुई । दीनदार सिद्दीक़ स्वयं को चन्बसवेश्वर का अवतार बताते थे, और कहते थे कि भगवान् बसवेश्वर के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए ही इस्लाम धर्म है। इस प्रकार गुमराह करके दीनदार सिद्दीक़ और उनके अनुयायियों ने हिंदुओं को इस्लाम धर्म में परिवर्तित करना शुरू किया। अपने प्रचार -प्रसार में वे राम और कृष्ण जैसे हिंदुओं के महापुरुषों का अपमान करते और इस्लाम को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म बताते। 1929 में आर्य समाजी आंदोलन में भी तेज़ी आयी। 1930 में हैदराबाद राज्य के प्रत्येक जिले में आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। उद्गीर के भाई बंसीलाल और श्यामलाल, इन दोनों बंधुओं ने राज्य मे भरपूर कार्य किया। हिंदु समाज में फैली कमजोरी और हीनभावना को नष्ट कर, उसे पूरे स्वाभिमान और गर्व से जीना आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, बै. विनायकरावजी विद्यालंकार, पं.नरेंद्र जी आर्य आदि ने सिखाया।

अपने राज्य में आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव को देख कर निजाम की वक्र दृष्टि आर्य समाज पर पड़ी। 1935 में निलंगा में सरकार ने अपने गुंडों के माध्यम से एक हवनकुंड और एक आर्य समाज मंदिर ध्वस्त कर दिया। किसी के हाथ में "सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। निलंगा की घटना से शेषरावजी वाघमारे (पिताजी-आनंद मुनिजी) और उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं के क्रोध की सीमा न रही। शेषरावजी निर्भीक, साहसी, संगठन-कुशल और बुद्धिमान नेता थे। उन्होंने इस अत्याचार का बदला लेने के लिए हजारों लोगों को गाँव-गाँव में, शस्त्रों से सुसज्जित आर्य समाज का संगठन स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषरावजी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिंदुओं को वैदिक धर्म के ध्वज तले हथियारों समेत एकत्रित किया। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए। इत्तेहादुल पार्टी या रजाकार की ओर से आक्रमण होने का कोई भी अंदेशा होता, तो आर्य समाज मंदिर से संकेत की आवाज सुन घर-घर से पुरुष और 18-20 साल के लड़के लाठियां, कुल्हाड़ी, भाले, बरछियाँ, तलवारें, बंदूके आदि लेकर आर्य समाज मंदिर की ओर दौड़ पड़ते। 5-10 मिनट में ही सभी, पूरे अनुशासित तरीके से मुकाबले के लिए तैयार हो जाते। खाकसार पार्टी, दीनदार सिद्दीक़ पार्टी, इत्तेहादुल संगठन और रज़ाकार के पीछे सरकार थी। इसलिए वे सभी हिंदुओं के खिलाफ बेरोकटोक हिंसा कर रहे थे ।

हिंदू व्यक्ति यदि किसी रोहिले या पठान को गलती से भी कुछ कह दे तो वे तुरंत पिस्तौल निकाल लेते और जान से मार डालने की धमकी देते। हिंदुओं के जबरन धर्मांतरण का काम पूरे ज़ोरों से चल रहा था। इस काम को सरकार का पूरा प्रोत्साहन और सहायता थी। सरकार की ओर से इसी काम के लिए तीन सौ से ज्यादा मौलवी वेतन पर रखे गए थे। इस मुहीम को "तबलीत" या "तंज़ीम" कहा जाता था। निजाम ने वेतनभोगी मौलवियों को नियुक्त किया था और हिंदू-मुसलमानों में शांति बनाये रखने के लिए "अमन कमिटियाँ" बनाई थी । ये मौलवी उन कमिटियों में काम करते थे । ये अमन कमिटियाँ सिर्फ दिखावे के लिए थी । ये वेतनभोगी मौलवी अस्पृश्यों की बस्तियों में घूम-घूमकर उन्हें हिंदुओं के खिलाफ बगावत करने के लिए भड़काते थे। ये मौलवी मुस्लिम गुंडों को भी भड़काते। ये गुंडे खुराफात कर के दंगे भड़काते और सरकारी नौकर उनको बचाते। उदाहरण के लिए, तालुका कलंब में अंदुर गाँव में एक खटीक, गाय को काटकर उसका माँस बेचने के लिए बाजार में सड़क पर ही बैठ गया। हिंदुओं ने इस पर आपत्ति की। उससे कहा "चाहो तो अपने घर में तुम गोमाँस बेचो, लेकिन यहाँ बीच सड़क पर मत बैठो।" पुलिस हवलदार ने ही फौजदार से उसकी तकरार की। लेकिन फौजदार साहब ने तो हद ही कर दी !! वे खुद उस गाँव में पहुँचे और उस खटीक को सड़क से उठाकर हनुमान मंदिर की चौपाल पर बैठा दिया। हिंदू और क्रोधित हो गए और दंगा भड़कने के आसार नज़र आने लगे। तब फौजदार साहब ने उसे चौपाल से उठाकर मंदिर के सामने बैठा दिया। ऐसे थे वहाँ के सरकारी अधिकारी। ऐसी घटनाओं से आर्य समाज के लोग और संगठित होते गए। साथ ही इत्तेहादुल पार्टी और मुस्लिम गुंडे और भी भड़क उठे।

1938 में गुंजोटी में वेदप्रकाश का खून हो गया। वेदप्रकाश की हत्या का समाचार पाते ही भाई बंसीलाल और वीरभद्र जी आर्य तुरंत गुंजोटी पहुँचे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वेदप्रकाश की हत्या हैदराबाद मुक्ति संग्राम का पहला बलिदान था। उसके बाद भाई श्यामलाल जी को ख़राब खाना और पानी देकर प्रताड़ित किया गया। बीमार होने के बाद भी दवाखाने में नहीं ले जाया गया। अंतत: जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया। हैदराबाद राज्य में 1938-39, इन दो सालों में शहर में हजारों की संख्या में आर्य समाजी लोगों ने सत्याग्रह किया। सोलापुर में माधवराव अणे की अध्यक्षता में एक परिषद् आयोजित की गई ताकी इस सत्याग्रह को हिंदुस्तान की जनता का भी समर्थन मिल सके। इस परिषद् मे "हैदराबाद विरोध दिवस" मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सारे हिंदुस्तान भर में "हैदराबाद विरोध दिवस" का माहौल बनने लगा। भारत भर से कई आर्य समाजी सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हैदराबाद स्टेट पहुँचने लगे। सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपुर, उत्तर प्रदेश, रावलपिंडी से हजारों कार्यकर्ता हैदराबाद में दाखिल हुए। अनगिनत सत्याग्रहियों को जेलों में ठूंस दिया गया। कईयों को पीटा गया। ख़राब खाना और पानी देने के कारण कई सत्याग्रही बीमार पड़ गए। उसमें भी हद तो तब हो गई, जब इत्तेहादुल संगठन के गुंडे जेलों में घुस कर पुलिस के सामने, सत्याग्रहियों को बेरहमी से मारने-पीटने लगे। इस अत्याचार में एक कार्यकर्ता सदाशिव विश्वनाथ पाठक की 12-08-1939 को हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई। राजस्थान के स्वामी ब्रह्मानंद जी का भी चंचलगुडा जेल में निधन हो गया।

- शेष अगले अंक में

श्रावणी उपाकर्म पर्व
रक्षा बन्धन पर विशेष

भाई-बहन के स्नेह का त्योहार - रक्षाबन्धन एवं श्रावणी उपाकर्म का महत्व

भारतीय संस्कृति में पर्वो का बहुत बड़ा महत्त्व है। पर्व का अर्थ है- पृणाति-पूरयति-इति पर्व:-जो पूर्ण कर दे, तृप्त कर दे, उत्साहित, आनन्दित कर दे वह पर्व है। भारतीय परंपरा में अनेक पर्व हैं- होली, दीपावली, दशहरा इत्यादि। उन्हीं पर्वो में से श्रावणी पर्व का विशेष महत्त्व है। श्रावणी पर्व श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से लेकर श्रीकृण जन्माष्टमी तक धूम-धाम से मनाया जाता है। इस बीच श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को रक्षाबन्धन (राखी) के रूप में बहन भाई विशेष रूप में मनाते हैं।

रक्षाबन्धन का अभिप्राय है-आत्म रक्षा के लिए बन्धन। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को बहन अपने भाई के हाथों में रक्षासूत्र बांधती है और अपने भाई के सुखी दीर्घायु जीवन की कामना करती है। भाई अपनी बहन की रक्षा के लिए संकल्पबद्ध होकर कहता है कि जब तक मेरी श्वास रहेगी, जब तक मेरा जीवन रहेगा, तब तक मैं तेरी यथाशक्ति रक्षा करूंगा। यह अद्भुत संस्कृति है। यह एक छोटा-सा सूत्र धागा है, लेकिन उस धागे के अन्दर छिपा हुआ पवित्र प्रेम तथा त्याग अविस्मरणीय है। वस्तुत: हमारी संस्कृति में श्रावणी पर्व का विशेष महत्व है। "श्रुश्रवणे" धातु से श्रवण शब्द बनता है, जिसका अर्थ है सुनना। श्रावण का अर्थ है-सुनाना। श्रावण मास से ही श्रावणी पर्व बना है। जिसका अर्थ है-सुनना-सुनाना जिस पर्व में होता है वह है श्रावणी पर्व।

"उपाकर्म" वेदपारायण के शुभारम्भ को उपाकर्म कहते हैं। श्रावणी उपाकर्म का श्रावण मास-सावन के महीना से विशेष सम्बन्ध है। क्योंकि इस समय वर्षा होती है। वर्षाकाल में अनेक जीवाणु पैदा होते हैं, जिससे चलने-फिरने में जीवाणुओं की मृत्यु हो जाती है, पैरों के नीचे आकर मर जाते हैं। यह मान्यता जैन साधुओं की है। अत: वे चातुर्मास्य व्यतीत करने नगर, ग्रामों में आ जाते हैं और श्रावकों (शिष्यों) के साथ अध्ययनाध्यापन - श्रवण-श्रावण करते हैं। जैनमन्दिरों में सत्संग का कार्यक्रम होता है।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से श्रावणी पर्व पर वैदिकधर्मीजन अपने मन्दिरों में, सत्संग स्थलों पर वेद प्रचार सप्ताह समारोह का आयोजन करते हैं और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेदकथाओं, सत्संगों का कार्यक्रम होता है। वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण होता है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना अपना परम धर्म समझते हैं।

ब्राह्मणों के लिए यह पर्व विशेष महत्त्व रखता है। क्योंकि ब्राह्मण ही क्षत्रियादि वर्णो (मनुष्यों) का मार्गदर्शक होता है। अत: उसे ज्ञानी होना आवश्यक है। वेदादि शास्त्रों के पढ़ने से, स्वाध्याय करने से वह ज्ञानी होता है। वेदस्वाध्याय उसका अभिन्न अंग है। इसलिए संन्यासी, ब्राह्मण के लिए कहा गया है-**"संन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्"** भले ही अन्य सब कर्म छोड़ दे, परन्तु एकमात्र वेदों का पठन-पाठन रूपी कर्म न छोड़े। मनु महाराज ने कहा है- **"अध्यापन- मध्ययनं... ब्राह्मणानाम कल्पयत्"** ब्राह्मणादि वर्णो का वेदों का अध्ययन-अध्यापन रूपी कर्म नित्य करने के हैं।

प्राचीन काल में इस दिन गुरुकुलों में यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने की परम्परा थी। आज भी इस श्रावणी पर्व के अवसर पर हर्षोल्लास के साथ यज्ञपूर्वक नए प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन-यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार किया जाता है। 1. पितृऋण, 2. देवऋण, 3. ऋषिऋण से उऋण होने के लिए इस दिन नए जनेऊ धारण करते हैं। पुराने जनेऊ उतारते हैं। बुराइयों को छोड़ने एवं अच्छाइयों को ग्रहण करने के लिए संकल्प करते हैं। स्वाध्याय के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए महर्षि मनु जी महाराज ने मनुस्मृति 6/8 में कहा है-**'स्वाध्याये नित्ययुक्त: स्यात्'** स्वाध्याय में सदा लगे रहना चाहिए। स्वाध्याय का मतलब है-1. वेदादि धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन -अध्यापन, 2. ओ३म् या गायत्री मंत्र आदि पवित्र मन्त्रों का जप करना तथा आत्म चिंतन-आत्मनिरीक्षण करना।

स्वाध्याय की महिमा के कारण ही प्राचीनकाल में ब्रह्मचर्य की समाप्ति पर समावर्त्तन के समय स्नातक (1. विद्या स्नातक, 2. व्रतस्नातक, 3. विद्याव्रतस्नातक) शिष्य का आचार्य **"स्वाध्यायान्मा प्रमद:, स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्,"** का उपदेश देते थे कि आगे चलकर गृहस्थाश्रम में भी स्वाध्याय करते रहो, जिससे सद्गति होती रहे। इस प्रकार यह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा- रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म, श्रावणी पर्व हर वर्ष शिक्षा देता है कि जो यज्ञोपवीत तन्तु यज्ञों का प्रसाधक है, उसको हम धारण करें। अपनी संस्कृति का स्मरण करते हुए स्वाध्याय को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने में तत्पर रहें। तथा कम-से-कम वर्ष में एक बार श्रावणी उपाकर्म में अवश्य सम्मिलित होकर वर्षभर में जाने-अनजाने होने वाले अपराधों का प्रायश्चित द्वारा निराकरण करें।

श्रावणी पूर्णिमा पर आर्यसमाजों में यज्ञोपवीत संस्कारों का करें आयोजन

पुस्तक परिचय

भारत के परिवर्तन और परिवर्तन क्रांति के सत्य की गहराई और सच्चाई

जानने के लिए अवश्य पढ़ें

परिवर्तन

(परिवर्तन आता नहीं - लाया जाता है।)

लेखक विनय आर्य
महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पुस्तक खरीदने के लिए कोड स्कैन करें

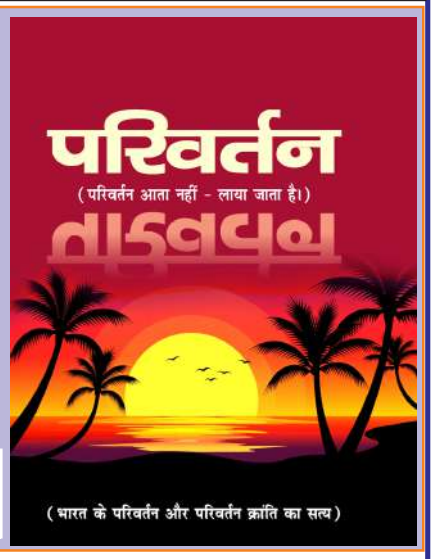

इतिहास अपने आपमें उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल- मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है, पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यो को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तहर सम्मान/ स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अत: उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं, तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं, ऋषि दयानन्द जी के जीवन/ कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला-आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व का गौरवकाल (5000 वर्ष पूर्व तक)

दूसरा- महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महा भारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा- महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

चौथा- महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां और उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां- वर्तमान युग की उन चुनौतियों/समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने को तैयार हैं।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं, जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे। (1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

महर्षि दयानन्द के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष की दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क : 18–21 जुलाई 2024

होफ्स्ट्रा यूनिवर्सिटी, लाँग आईलैंड, न्यूयार्क (अमेरिका) में ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व का अनुभव हो रहा है कि महर्षि दयानन्द जी की 200 वीं जन्म-जयन्ती के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका द्वारा न्यूयार्क में 18 जुलाई से 21 जुलाई 2024 तक एक भव्य एवं विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। विदेशी धरती पर इतना बड़ा आर्य महासम्मेलन निश्चित रूप से अपनी ऐतिहासिक निश्चित रूप से अपनी ऐतिहासिक स्मृतियाँ छोड़कर जायेगा। इस महासम्मेलन में उपस्थित सभी आर्यजन इस अविस्मरणीय महोत्सव के साक्षी बनकर अपने आपको अत्यन्त सौभाग्यशाली और गौरवान्वित अनुभव करेंगे।

आज से ठीक 200 वर्ष पूर्व हिन्दुस्तान के टंकारा ग्राम की पावन धरा पर एक ऐसी दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ था जो मूलशंकर के नाम से धीरे-धीरे बड़ा हुआ और जो केवल 21 वर्ष की किशोरावस्था में सभी राजसी सुखों का त्याग कर सच्चे शिव की तलाश में घर से चुपचाप निकल पड़ा। जो स्वामी दयानन्द के नाम से भारत के नव-जागरण का पुरोधा बना। जो घोर अज्ञान और अंधकार में डूबे हुए भारतीयों का मसीहा बनकर सामने आया। महान समाज सुधारक के रूप में जो जन-जन के मानस पटल पर छा गया। जो स्वदेश और स्वधर्म के हितार्थ पूरे विश्व में एक महापुरुष के रूप में विख्यात हुआ और जिसने सम्पूर्ण मानव-मात्र के कल्याण के लिये **'वेदों को ओर लौटो'** का नारा दिया।

महापुरुषों की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती। उनका लोकहितकारी चिन्तन, त्रैकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वदेशिक होता है और युग-युगों तक समाज का पथप्रदर्शन करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती हमारे समाज एवं राष्ट्र के ऐसे ही एक प्रकाश स्तंभ थे, जो न केवल धर्मक्रांति के बल्कि राष्ट्रक्रांति के भी प्रेरक बने।

महर्षि दयानन्द ऐसे प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने देश, काल तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अनेक क्रान्तिकारी कदम उठाये। उन्होंने सर्वप्रथम गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत को आजादी दिलाने का जोरदार शंखनाद किया। स्वराज्य और स्वधर्म का महत्व जनमानस को समझाया। भारत की प्रजा को घोर अज्ञान, अंधकार और अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने के लिये उन्होंने अनेक पांखडो और समाजिक कुरीतियों का खंडन करते हुए जन-जागरण का प्रचन्ड अभियान प्रारम्भ किया। नारी की दुर्दशा देखकर उन्होंने स्त्री को सभी प्रकार के अधिकार और सम्मान देने की जोरदार आवाज उठाई। ऊँच-नीच, छूत-अछूत के भेदभाव से अनेक जातियों में बट रहे समाज को पतन के गर्त में जाने से बचाने के लिये उन्होंने दलितों को गले लगाना प्रारम्भ किया। प्राचीन वैदिक शिक्षा की रीढ़ रही गुरुकुलीय परम्परा को ध्वस्त होता हुआ देखकर उन्होंने गरुकुलीय शिक्षा पर जोर दिया जिसके फलस्वरुप गुरुकुल कांगड़ी जैसे अनेक गुरुकुलों की स्थापना हुई। अंग्रेजों के शासनकाल में कृषि और पशुधन को निरन्तर घटता हुआ देखकर उन्होंने भारत के इतिहास की प्रथम गौशाला हरियाणा के रेवाड़ी में स्थापित करवाई।

19वीं शताब्दी के ऐसे महामानव, ऐसे महान योगी और तपस्वी के मंतव्यों को पूरा करने के लिये हमें भी आज देश, काल और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक परिणाम लक्षी योजना (Result Oriented Action Plan)बनाने की महती आवश्यकता है। आज सत्य सनातन वैदिक धर्म का अस्तित्व पूरे खतरे में है। हमारी भावी युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचोंध से बुरी तरह प्रभावित हो रही है। विश्व की समस्त युवा शक्ति आज नशाखोरी (Drug Addiction) का शिकार हो रही है। विधर्मियों के द्वारा उन्हें No Child Policy का पाठ पढ़ाया जा रहा है। हमारी संख्या निरन्तर घट रही है, विधर्मियों की निरन्तर बढ़ रही है। विश्व पटल की दृष्टि से जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और राजसत्ता का निरन्तर विस्तारवाद (जिसके कारण युद्ध के बादल हर समय छाये रहते हैं।) जैसी गंभीर और घातक चुनौतियाँ सामने खड़ी हैं। जिन वेदों की हम हर सम्मेलन में चर्चा करते हैं उन पर अनेक प्रकार के आक्षेप उठाये जा रहे हैं जिनका उत्तर देने के लिये कोई विद्वान सामने आता हुआ दिखाई नहीं दे रहा।

अमेरिका के इस सम्मेलन में इस विषय पर गम्भीर चिंतन की आवश्यकता है कि वर्तामान जीवन शैली और परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए क्या वैदिक शिक्षा और वैदिक संस्कृति वर्तमान चुनौतियों का सामना करते हुए मानव-मात्र के कल्याण के लिये तथा विश्व में सुख और शांति स्थापित करने के लिये प्रासंगिक सिद्ध हो सकती है? यदि ऐसा सम्भव है तो इस सम्मेलन में उसका मास्टर प्लान अवश्य तैयार होना चाहिये।

मैं इस सम्मेलन के आयोजन हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका की पूरी टीम को अनेक बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न होगा । इसकी स्मृतियाँ सदैव अविस्मरणीय रहेंगी। मंगलमय शुभकामनओं के साथ।

आपका - **सुरेशचन्द्र आर्य** - प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

प्रथम पृष्ठ का शेष

ही सीमित नहीं थी बल्कि वे संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना करते हुए आजीवन परोपकार में ही संलग्न रहे।

किन्तु इसे विचित्र विडंबना ही कहा जाएगा कि एक विद्वान संन्यासी स्वामी रामभद्राचार्य जी ने 20 जुलाई 2024 को महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति अनर्गल और झूठे आरोप लगाते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने बहुत बड़ी भूल की, उन्होंने रामायण और महाभारत को काल्पनिक ग्रंथ कहा, स्वामी रामभद्राचार्य यहाँ पर ही नहीं रुके उन्होंने आगे कहा कि अगर स्वामी दयानंद आज होते तो वे भी अपनी इस भूल पर संकोच करते, जबकि महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में रामायण और महाभारत को पढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हुए पठन-पाठन विधि में महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

इस तथ्यहीन आरोप को सुनकर संपूर्ण आर्य जगत में काफ़ी रोष व्याप्त हैं और हर आयु वर्ग के आर्यजनों ने इसके विरुद्ध आवाज़ भी उठायी है, आर्य समाज के विभिन्न संगठनों ने स्वामी रामभद्राचार्य जी को शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारा है, परिणाम स्वरूप स्वामी राम भद्राचार्य जी ने अपनी वीडियो तो यूट्यूब चैनल से हटा ली, लेकिन उन्होंने अब तक अपने शब्दों को वापस नहीं लिया और न ही खेद व्यक्त किया है। इस बात से नाराज़ आर्य समाज ने 2 अगस्त 2024 को जन्तर-मन्तर पर भारी धरना प्रदर्शन किया, जिसमें दिल्ली एन.सी.आर. के विभिन्न आर्यजनों ने प्रबलता से अपनी माँग रखते हुए स्वामी राम भद्राचार्य जी को शब्द वापस लेने के लिए तथा शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा। इस अवसर पर गुरुकुल इंद्रप्रस्थ, फरीदाबाद की आर्य समाजों के अधिकारी, पलवल, होडल और दिल्ली से अनेक आर्यजन उपस्थित रहे, धरना प्रदर्शन की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने की। इस शांतिपूर्ण प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे फरीदाबाद से पंडित चंदन आर्य और मंजीत आर्य ने अपने उद्बोधन में स्वामी रामभद्राचार्य जी से क्षमा माँगने की माँग की और इसको एक सोची-समझी साज़िश बताया। इस अवसर आर्यजनों ने ऋषि दयानंद सरस्वती जी के परोपकारी कार्यों को आधार बनाकर मधुर भजन प्रस्तुत किए, जयकारे लगाए और आर्य समाज अमर रहे, महर्षि दयानंद की जय से सम्पूर्ण वातावरण भाव विभोर हो गया। परोपकारणी सभा के प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य जी ने ज़ोरदार भाषण देते हुए स्वामी राम भद्राचार्य जी को शास्त्रार्थ और आंदोलन की चेतावनी देते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती 19वीं सदी के महामानव के ऊपर इस तरह का मिथ्या आरोप निंदनीय और असहनीय है। इसके लिए स्वामी राम भद्राचार्य जी को तुरंत क्षमा माँगनी चाहिए, अपने शब्द वापस लेना चाहिए, अन्यथा आर्य समाज द्वारा यह तो धरना प्रदर्शन का आरंभ है, हम आंदोलन करने से भी पीछे नहीं हटेंगे। इस अवसर पर अनेक अन्य आर्यजनों जिनमें श्री रामबीर जी, श्री हरिचंद जी और अनेकानेक महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य ऋषि पाल जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का अपमान, आर्य समाज का अपमान है। हम इसे नहीं सहेंगे और स्वामी रामभद्राचार्य जी को अपने शब्द वापस लेने चाहिए, गुरूकुल गद्यपुरी के आचार्य जी ने भी दयानंद सरस्वती जी का गुणगान करते हुए उनके अपमान को अनुचित ठहराया। अध्यक्ष श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज की मान्यताएं, परम्पराओं और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों तथा मानव जाति पर किए गए उपकारों का वर्णन करते हुए स्वामी रामभद्राचार्य जी के आरोपों को निराधार और मिथ्या बताया तथा उन्हें शब्द वापिस लेने की मांग की। आपने स्वामी रामभद्राचार्य जी के प्रति अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे एक संन्यासी है, विद्वान हैं, हम उनसे क्षमा मांगने की बात न कहते हुए हम अपेक्षा करते हैं कि वे शीघ्र अतिशीघ्र अपने असत्य शब्दों को वापिस लें। आपने स्वामी रामभद्राचार्य जी के स्पष्टीकरण को हिन्दू समाज की मजबूती कहा और आर्यसमाज हिन्दू समाज की रक्षा पंक्ति है, इसको कमजोर करने का मतलब हिन्दू समाज को कमजोर करना बताया।

साप्ताहिक स्वाध्याय

बम्बई में आर्य समाज की स्थापना

गतांक से आगे-

17वां नियम बड़े महत्त्व का है। उसमें एक बड़ा उच्च सिद्धान्त बतलाया गया है। उस समय और शायद सदा प्रत्येक देश में दो प्रकार के विचारक रहे हैं। एक वे जो स्वदेश को सब भूमण्डल देशों में ऊंचा मानकर केवल उसी की भलाई को अपने जीवन का लक्ष्य मान लेते हैं। दूसरे वे जो विश्वहित के विचार को ऊंचा रख कर देश हित को एक संकुचित भाव मानते हैं। 17वें नियम में बड़ी सुन्दरता से दोनों को मिला दिया गया है। नियम यह है- 'इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रयत्न किया जाएगा - एक परमार्थ, दूसरा व्यवहार इन दोनों का शोधन तथा संसार के हित की उन्नति की जावेगी।' स्वदेश की उपेक्षा नहीं की गई, परन्तु उसका अन्तिम लक्ष्य संसार का हित करना रखा गया है। स्वदेश का हित प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है। उसके लिए नि:श्रेयस और अभ्युदय, परमार्थ और व्यवहार दोनों ही आवश्यक हैं। केवल भारतवासी ही नहीं, सभी देशों के निवासियों के लिए यह नियम रखा गया है। सब अपने देश के हित में यत्नवान् हों, परन्तु देशहित का भी अंतिम लक्ष्य विश्व-हित हो। विश्व-हित की भावना के बिना स्वदेश-हित एक निर्मूल ममता है और स्वदेश हित के बिना विश्व-हित के साधन का यत्न चांद को पकड़ने के यत्न के समान है। 18 से 25 तक के नियम कार्यकर्त्ताओं को प्रबन्ध-सम्बन्धी निर्देश करते हैं। 26वें नियम में एक बहुत छोटी परन्तु महत्त्वपूर्ण बात है। जब तक आर्यसमाजस्थ नौकर मिलना सम्भव हो, तब तक बाहर का नौकर न रखा जाय। शेष नियमों में कोई विशेष साम्प्रदायिक बू नहीं है; परन्तु इस नियम में कुछ थोड़ा-सा साम्प्रदायिक भाव पाया जाता है। इतने उदार नियमों में यह कुछ अनुदार-सा प्रतीत होगा, परन्तु यदि इस दृष्टि से विचार किया जाय कि उनकी दशा सुधरने का एक यह भी उपाय है कि चाहे जाति में कोई हो, यदि वह आर्य बन गया हो तो उसे सेवक बनाने से किसी आर्य पुरुष को संकोच न हो तो समझ में आ जाएगा कि इसमें केवल साम्प्रदायिकता ही कारण नहीं है, सेवक समाज का हित भी कारण है। इस्लाम ने प्रारम्भ में गुलामों की दशा सुधरने का जो उद्योग किया था, उसे दृष्टि में रखते हुए इस नियम पर विचार किया जाय तो नियम के औचित्य पर विश्वास करना कठिन नहीं होगा। 28वें नियम में नियमों के घटाने-बढ़ाने के लिए सब श्रेष्ठ सभासदों का सलाह करना आवश्यक बताया गया है। यह बम्बई के आर्यसमाज का संगठन है। इसमें सन्देह नहीं कि यह कई अंशों में अपूर्ण है। विशेषतया कार्य में आनेवाले व्यावहारिक नियमों का बहुत अभाव है। बहुसम्मति से निश्चय हो या सर्वसम्मति से नियम-परिवर्तन के लिए कितना बहुमत होना आवश्यक है; चुनाव कितने समय पीछे हों; इत्यादि व्यावहारिक बातें नियमों में से छूट गई है। यह भी नहीं कि यह केवल शुद्ध उद्देश्यों या मूल सिद्धान्तों का ही वर्णन हो, इसमें कई एक व्यावहारिक नियम विद्यमान हैं, परन्तु वे भी अपूर्ण और अस्पष्ट हैं। यह ठीक है, तो भी यह कहने में कुछ अत्युक्ति नहीं है कि इन नियमों में महर्षि जी के हृदय का आशय अधिक स्पष्टता से प्रतिबिम्बित है। उद्देश्य का संक्षेप में परन्तु बड़ी स्फुटता से प्रतिपादन है। शेष नियम भी महर्षि जी के आशय को बड़ी सुन्दरता से अभिव्यक्त करते हैं।

एक बात और है। इन नियमों पर ब्राह्मो समाज के संगठन का प्रभाव स्पष्ट है सिद्धान्तों का नहीं, अपितु कार्य सम्बन्धी व्यावहारिक संगठन का इसमें कुछ आश्चर्य भी नहीं है। यह असन्दिग्ध बात है कि महर्षि जी के सिद्धान्तों का निर्माण बिल्कुल स्वतन्त्र रीति से हुआ था वह किसी के अनुकरण में नहीं था। वह एक

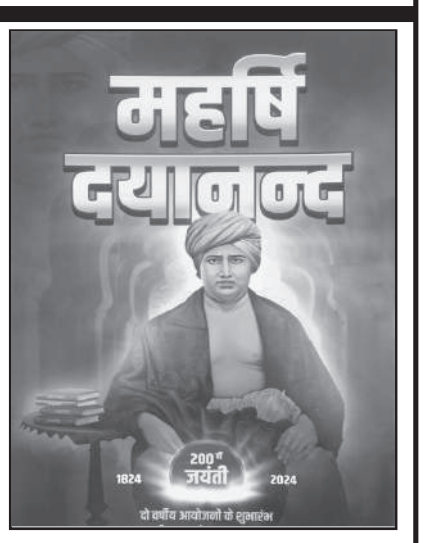

ज्ञानी और पर्युत्सुक हृदय का विकास था, परन्तु प्रतीत होता है कि समाज के संगठन का विचार उतना अपेक्षारहित नहीं था। बम्बई के निवासी महर्षि जी के पास गए और समाज की स्थापना के सम्बन्ध में निवेदन किया। जिन लोगों ने महर्षि जी को दिल्ली में निमन्त्रण दिया था, उनमें बहुत से प्रार्थना समाजी थे, और प्रार्थना समाज ब्राह्मसमाज की एक शाखामात्र था।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Establishing Arya Samaj in Mumbai

People of Mumbai approached Swamiji and requested for deciding about organizing an organisation in (Samaji). Among those people who requested Swamiji there were many of Prarthna Samaji and Prasthna Samaj was like a branch of Brahmo Samaj. Those people requested Swamiji to set up an organisation. Idea of organizations like weekly satsang, Grihasti Pracharak, etc. are not new though they seem to be new. Effect of organisation organized before is quite clear. Some people may opine that giving recognition to effect of those organisation, importance of Samaj or the great person who organised the Samaj. This is just a vague idea, organisation are follow the practice of present time. They can't remain unaffected by the time. They are the real illness the society. Though Arya Samaj was effected by Brahma Samaj, even then we will find in next pages that Arya Samaj is more according to need of time than Brahma Samaj. It is as per the requirements of time and the community and also more useful that is why the community worked toward it with more curiosity, care and pain.

Prachar was held for about 5 months in Kathiawar and Pune. Bombay had been moved by the Prachar by Swamiji. Gurus of Vallabh religion were afraid and had to think of leaving Bombay, Brahman Mandli was badly affected by condemnation of Idol worship under the pressure of Public they had to take part in debate once. The first debate was held in the library the school. Second debate was held in two residence of Hoka Bahra Jiwan after Swamini returned from Kathiawarh with Ramlal Shastra'. The topic of debate was "whether idol worship is allowed in Vedas or not," Pandit of Bombay could not prove that Vedas allowed Idol worship. Swamiji had gone to Baroda for somedays. Pandit Kamal Wajan shastri tried to disturb the appointment. Swamiji returned to Bombay. Debate was held in 'Kaos ji Framji Hall. There was little fight with Christians also. Padri Wilson was a wise man. Swamiji invited him for debate. There was no reply. So, Swamiji himself approached the padri. But he was not ready for debate. He showed that he was very busy and had to go out for some important work. While visiting Gujrat Swamiji held Prachar in Surat Bharoch and some other cities. He gave new life to Aryas. Then he moved towards Ahmedabad in December. He stayed in the temple of Manikeshwar Mahadev on the banks of Sabarmati. There debate was held with Pandits. It had a great effect. Arya Samaj was established there soon, Swamiji went to Rajkot when Principal Mr. Hargobind Das invited him. From Rajkot he returned to Ahmedabad and then to Balsarh and Basai. Then after performing Prachaar Karya in big cities of the state and retuned to Bombay in January. Arya Samaj was established there on this occasion. Then he reached Baroda visiting Ahmedabad on the way.

In Bombay Swamiji published 'Sanskar Vidhi' and 'Arya Abhinav'. Work of publishing books was going on with great speed. 'Satyarth Prakash' and 'Sanskar Vidhi' were the two big books ready for the people preparation were being made for publishing. 'Ved Prhashya'. Small books like 'Arya Abhinav' Vedant 'Dhwant Niwaran' and other small books were published from time to time.

Swamiji was the guest of the state in Baroda. He stayed in Mahadev temple on the bank of Vishava Mitra River. He delivered many lectures. Deewan and other high ranking officers attended the lectures. Pandit Mandli also attended. Audience were among all the sects of the society. When Swamiji recited Ved Mantras properly, Pandit Mandli put fingers in their ears and tried to run away. It is said that during debates Swamiji delivered speech in Sanskrit for some time. Which Pandit would not understand. Generally he spoke simple Sanskrit that was easily understood by these who knew some Sanskrit. On the request of Pandit Swamiji spoke a but difficult Sanskrit Mantras. The appointment were quite stunned, Swamiji delivered a lectures on 'Raj Dharm' on the request of Dewan Madhav Rao. Though Swamiji did not know English but he only speak on the topic of Raj Dharm which was generally explained in English all the officers were surprised to listen to him in Sanskrit. Swamiji had to go to Bombay from Baroda for debate with Pandit Kamal Naryan.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वतन्त्रता दिवस की 78वीं वर्षगांठ पर सभी देशवासियों को बधाई

और भारत माता परतंत्रता की बेडियो में जकडी गई। पहले हमारे ऊपर मुगलों ने शासन किया और फिर अंग्रेजों ने अपना अधिपत्य जमाया। लगभग एक हजार वर्षो की दासता के लंबे कालखंड में 19वीं सदी में महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने देश की हालत को करीब से देखा और अनुभव किया कि क्या यह वही देश है जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, जहां कपिल-कणाद, गौतम जैसे ऋषि मुनि जन्मे, जहां वेद-उपनिषद, दर्शन, स्मृतिग्रंथ रूपी ज्ञान संपदा का खजाना था, जहां यज्ञ-योग-स्वाध्याय, सत्संग-सेवा, साधना समर्पण की घर घर से खुशबू आती थी, वहां आज ढोंग-पाखंड, अविद्या का अंधकार है। चारों तरफ अज्ञान के कारण कुरीतियों के प्रहार है। ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि ने आजादी का सिंहनाद किया, क्रांतिकारी भाषण दिये, निर्भीकता से स्वदेशी राज्य को श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि चाहे विदेशी राजा कितना भी अच्छा हो लेकिन स्वदेशी से अच्छा कभी नहीं हो सकता। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के प्रताप से देश में स्वाधीनता की क्रांति की लहर प्रवाहित होने लगी, भारत माता को आजाद कराने वीर सपूतों की टोलियां निकलने लगी, देश के रण बांकुरों ने सर पर कफन बांध लिया और इस तरह अनगिनत अमर बलिदानियों की शहादत के बल पर 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हो गया।

हमारा देश आजाद तो हुआ लेकिन इसके साथ सबसे बड़ी विडम्बना यह रही कि जिन्होंने इस देश की स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानियां दीं, अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, वे आज़ाद भारत का सुख भोगने के लिए नहीं बचे। और जो बचे हैं, उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए कुछ भी दांव पर नहीं लगाया, इसलिए उन्हें स्वतन्त्रता की कीमत का बोध नहीं है। यही कारण है कि यह देश अपनी स्वतन्त्रता का पूरा लाभ नहीं ले पाया। आज़ादी की 78वीं वर्षगांठ पर भी देश में अनेक असमानताएं विधमान हैं, कई तरह की अव्यवस्थाएं गतिशील है। यहां कदम-कदम पर भेद भावपूर्ण नीतियां दिखाई देती हैं, आज भी शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय व्यवस्था आदि में बड़ी भारी खामियां हैं। एक वर्ग विशेष द्वारा भारत की उन्नति प्रगति में लगातार बाधाएं पैदा की जा रही हैं। वे भारत में रहते हैं, खाते-पीते और मौज उडाते हैं लेकिन इसके टुकड़े-टुकड़े करने की, इससे आजाद होने की मांग समय समय पर करते रहते हैं। उनकी हिंसक और विध्वंशक प्रवृति लगातार बढती ही जा रही हैं।

15 अगस्त 2024 को देश का 78वां स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महान राष्ट्रीय पर्व की सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। लेकिन यह पर्व हर वर्ष हम भारतवासियों में नई चेतना जगाने के लिए आता है, राष्ट्रभक्ति का संदेश देने आता है, परंतु हम लोग ऐसी गहरी नींद में सोए हुए हैं कि जागते ही नहीं। अगर समय रहते हम नहीं जागे, हमने अपने अमर शहीदों को स्मरण नहीं रखा, उनसे प्रेरणा नहीं ली, अपने देश के प्रति मन में प्रेम समर्पण नहीं जगाया तो हमारी आजादी के सही मायने समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। देश की युवा पीढी अपने भविष्य को घोर अंधेरे में धकेलने में आमादा है, दिन पर दिन नशे की शिकार होती जा रही है, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास के मकडजाल में फंसती जा रही है, अपने गौरवशाली इतिहास को भूलती जा रही है, अपने महापुरुषों की प्रेरणा को लगातार बिसराती जा रही हैं, आज स्थिति इतनी भयावह हैं कि हमारी युवा पीढ़ी में अधिकांश युवाओं को अपने अमर शहीदों के पांच नाम तक भी याद नहीं है। इसलिए आज की युवा पीढी को आजादी की कीमत को समझना ही होगा, पराधीनता सबसे बड़ा दु:ख है, यह याद रखना होगा, स्वाधीनता के लिए किए गए त्याग, बलिदान और समर्पण को नमन करना ही होगा।

अपने बलिदान से जिन्होंने आज़ादी का मार्ग प्रशस्त किया; उनमें चाहे फांसी के फन्दे को चूमने वाला वीर भगतसिंह हो या जीवन के अंतिम पल तक आजाद रहने वाला चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, उधम सिंह, राजेंद्रनाथ लाहिडी आदि सभी महान् बलिदानियों को याद करने का पावन दिन पन्द्रह अगस्त तो है ही लेकिन उनकी अमर प्रेरणा के अनुसार देश प्रेम की ज्योति को अपने मन में सतत प्रज्ज्वलित रखने की अत्यंत आवश्यकता है। जिन्होंने आजादी का स्वप्न देखा, जिन्होंने स्वयं यातनाएं सहीं और आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। वे असाधारण महान बलिदानी वीर थे।

सुख-सुविधा में जीने वाले बहुत लोग होते हैं। अपने ही स्वार्थों में जीवित रहने वाले भी दुनिया में बहुत हैं। अपने परिवार की मोह-ममता में पड़कर अपने ही परिवार का पालन-पोषण करने वाले लोग भी बहुत हैं और अपनों के लिए अपनी विरासत छोडकर जाने वाले लोग भी बहुत हैं। लेकिन देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले और देश की उन्नति प्रगति के लिए अपनी विरासत को छोड़ने वाले लोग दुनिया में बहुत कम हुआ करते हैं। इसलिए देश पर मर मिटने वाले लोग इस संसार में सबके पूजनीय एवं आदर्श हुआ करते हैं। वे देश के उज्ज्वल नक्षत्र होते हैं। इसलिए आज देश की युवापीढी को आजादी के अमृत महोत्सव पर भारत के गौरव को अक्षुण बनाए रखने के लिए देश के प्रति त्याग, समर्पण और बलिदान की भावना को प्रबल बनाए रखने का संकल्प करना चाहिए, अपने देश के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर मानव कल्याण के पथ पर अग्रसर होने का संकल्प लेना चाहिए और जो देश विरोधी तत्व हैं उनसे भी संघर्षरत रहने का जज्बा जगाए रखने का संकल्प करना चाहिए। तभी यह आजादी का अमृत महोत्सव मनाना सार्थक होगा।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने कहा था-आज आवश्यकता है मुट्ठी बांधने की। हम इकट्ठे होंगे तो आजादी मिलेगी। हमें आज़ादी तो मिल गई; पर हमने आजादी की कीमत को नहीं पहचाना। आज फिर शैतानी ताकते सिर उठा रही हैं, छदम युद्ध देश के भीतर ही चल रहा है, हमारी संस्कृति और सभ्यता को लोग नष्ट करने में लगे हैं, हिंदू सोया हुआ है, सपनों में खोया हुआ है, इसे नींद से जागना होगा, अपने आपको पहचानना होगा, अपने पूर्वजों से शिक्षा लेनी होगी तभी स्वाधीनता सुरक्षित रहेगी। दुर्भाग्य की बात है कि जो आधी-अधूरी आज़ादी हमें प्राप्त हुई, उसे भी सुरक्षित रहने नहीं दिया जा रहा है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था-"आज़ादी प्राप्त करना कठिन नहीं है, लेकिन आज़ादी को सुरक्षित रखना ज़रूर कठिन है। आने वाले समय में इसके लिए बड़ी कुर्बानियां देनी होंगी।" आज भाषा के नाम पर, वेशभूषा के नाम पर, भावनाओं के नाम पर समाज को बांटा जा रहा है। अपनी आज़ादी को सुरक्षित रखने की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए कुर्बानियां ज़रूर देनी पड़ेंगी। अगर अपनी आज़ादी की सुरक्षा चाहते हो तो अपने बच्चों को अपना इतिहास सुनाओ, अपने वीरों की शौर्य-गाथा, सुनाओ, जिससे देशभक्ति की घुट्टी हमारे अन्दर पहुंचे। फिर से कोई सुभाष, भगतसिंह, कोई रामप्रसाद हमारे बीच पैदा हो। क्योंकि हमारी आज़ादी इन्हीं के कारण सुरक्षित रह सकती है। दुनिया में भारत से बढ़कर कोई दूसरा देश नहीं है। भारत की संस्कृति से बढ़कर संसार में कोई दूसरी संस्कृति नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि इसे खोखला करने वाले दीमक आज भी हमारे देश में मौजूद हैं। उन वीरों की जय ज़रूर बोलना और उन बलिदानी वीरों को ज़रूर याद करना, जिन्होंने देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। यह हमेशा ध्यान रखना जो कौम अपने शहीदों को याद किया करती है, वह कौम हमेशा जिन्दा रहती है। जो कौम अपने शहीदों को भूल जाती है, वह कभी जिन्दा नहीं रह पाती।

- ***सम्पादक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2
नई दिल्ली-48

प्रधान : श्री सहदेव नांगिया
मन्त्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री प्रिय ब्रत

आर्यसमाज सुन्दर विहार
नई दिल्ली-87

प्रधान : श्री आर. पी. सिंह
मन्त्री : श्री अमरनाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रह्लाद सिंह आर्य

आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश
पार्ट-1, नई दिल्ली-48

प्रधान : श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा
मन्त्री : श्री अरुण कुमार बहल
कोषाध्यक्ष : श्री अमर सिंह पहल

पृष्ठ 2 का शेष

ये ब्रिटेन के निकट भविष्य .....

हमलों में शामिल सारे लोग मुसलमान थे, जिन्होंने जिहादी इस्लाम का हवाला देकर लोगों का मजहब के नाम पर कत्ल किया। अब आखिर में अधिकांश मुसलमानों और मजहबी नेताओं ने इन जिहादियों के बारे में साफ तौर पर स्टैंड लेना शुरू कर दिया है, लेकिन शायद इसमें बहुत देर हो गई है।

यानि बीबीसी ने अपने इस आर्टिकल में ऐसे दिखाया था कि मुस्लिम जगत कितनी भी सफाई दे, लेकिन ब्रिटेन के लोग समझ गए हैं कि ये सब इस्लाम का आतंक है तथा इस आतंक से ब्रिटेन में इस्लाम का खौफ बढ़ चुका है। ब्रिटेन की आबादी में फिलहाल साढ़े 6 फीसदी मुस्लिम आबादी है, जो पिछले 10 साल के मुकाबले 2 फीसदी से ज्यादा बढ़ी है। यूरोपीय देशों में पहले से ही मुस्लिम आबादी बढ़ी है और अब फ्रांस की तरह ही ब्रिटेन में भी मुस्लिम समुदाय और मूल निवासियों के बीच तनाव बढ़ गया है। ब्रिटेन में फिलहाल लेबर पार्टी सत्ता में है, जिसकी नीतियां शरणार्थियों के लिए उदारवादी हैं। लिहाजा ब्रिटेन में शरणार्थियों की संख्या में और इजाफा हो सकता है और दक्षिणपंथी ब्रिटिश लोगों के साथ तकरार और बढ़ सकती है। - ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री राजकुमार शर्मा जी को पत्नीशोक

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज कृष्ण नगर के पूर्व प्रधान श्री राजकुमार शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कंचन शर्मा जी का दिनांक 25 जुलाई, 2024 की सायंकाल आकस्मिक निधन हो गया। 26 जुलाई को उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से गीता कालोनी शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 जुलाई, 2024 को आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित उनके निजी परिवार सं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 अगस्त, 2024 से रविवार 11 अगस्त, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 8-9-10/08/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7, अगस्त, 2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रतिष्ठा में,

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह